

GABRIELA

otra tipografía libre de “Google”

देवनागरी

अन्य फ़ॉन्ट मुक्त “गूगल”

24 जुलाई 2014

ਐ ਅ ਆ ਈ ਈ ਉ ਊ ਋ ਲੁ ਏ ਏ ਏ
ਏ ਔ ਔ ਔ ਔ ਕ ਖ ਗ ਘ ਙ ਚ
ਚ ਜ ਝ ਞ ਟ ਠ ਡ ਢ ਣ ਟਥ ਟ ਧ
ਨ ਨ ਪ ਪ ਫ ਬ ਭ ਮ ਯ ਰ ਰ ਲ ਲ ਲ
ਵ ਸ਼ ਸ਼ ਹ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ ਾ
ਕ ਖ ਗ ਜ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ ਙ
ਆ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ ਔ

कुलसचिव के पत्र से कालेज पूधानाचार्य असंतुष्ट

यूजीसी के कड़े रुख के बाद दबाव में विश्वविद्यालय प्रशासन डीयू ने वेबसाइट पर एफवाईयूपी के स्थान पर लिखा यूजी राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के चार वर्षीय पाठ्यक्रम पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के कड़े रुख के बाद डीयू प्रशासन भारी दबाव में है। कालेज प्रिंसिपल एसोसिएशन द्वारा अपनी स्थिति स्पष्ट कर देने के बाद डीयू पर दबाव बढ़ गया है। कालेज एसोसिएशन द्वारा डीयू और यूजीसी के बीच दाखिला संबंधी दिशा निर्देश को लेकर विरोधाभास की बात सामने आने पर आनन-फानन में डीयू की कुलसचिव ने कालेजों को यूजीसी द्वारा और जून को भेजे गए पत्र को ही बढ़ा दिया है। इसमें डीयू की तरफ से अतिरिक्त आदेश नहीं दिया है। इस पत्र से डीयू के कालेजों से कई प्रिंसिपल असंतुष्ट हैं। प्रिंसिपलों का कहना है कि यह पत्र भ्रामक है और इसमें डीयू की तरफ से न कोई आदेश है और न ही

कोई पक्ष। कालेजों के प्रिंसिपल को सोमवार को लिखे पत्र में कुलसचिव ने लिखा है, मुझे यूजीसी के सचिव से दिनांक 22 जून, 2014 के आदेश से महाविद्यालयों को भेजे गए सम-संख्यक और सम दिनांकित पत्र को प्रेषित करने का निर्देश प्राप्त हुआ है जो स्वतः स्पष्ट है। इस संबंध में कालेजों के प्रिंसिपलों का कहना है कि इस पत्र से कोई समाधान नहीं निकला है। ऐसे समय में डीयू को स्पष्ट रुख अख्तियार करना चाहिए। 15 जून, सोमवार की दोपहर को डीयू की वेबसाइट से चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (एफवाईयूपी) स्टेटस की जगह स्नातक पाठ्यक्रम (यूजी) लगा दिया है। हालांकि, वेबसाइट के अन्य पेज पर यह बदलाव नहीं किया गया है।

कड़े फैसलों की मजबूरी संसद के बजट सत्र की तिथियों की घोषणा के साथ ही आम जनता की रेल बजट और आम बजट से उम्मीदें बढ़ जाना स्वाभाविक हैं। महंगाई से तूस्त जनता यह चाहेगी कि बजट घोषणाएं उसके लिए कोई राहत की खबर लेकर आएँ, लेकिन कटु सच्चाई यह है कि मौजूदा आर्थिक हालात में सरकार चाहकर भी जनता को राहत देने की स्थिति में नहीं। यह सही है कि सरकार तेजी से काम करने के साथ बिगड़ी चीजों को बनाने के लिए अतिरिक्त श्रम कर रही है, लेकिन ऐसा लगता नहीं कि वह आर्थिक हालत सुधारने के साथ जनता को कोई उल्लेखनीय रियायत-राहत दे सकेगी। ऐसा इसलिए और भी है, क्योंकि हर दिन यह सामने आ रहा है कि पिछली सरकार ने किस तरह देश का बेड़ा गर्क कर रखा था। ऐसा लगता है कि मनमोहन सरकार ने आम चुनावों के बहुत पहले से ही काम करना बंद कर दिया था। निःसंदेह पिछली सरकार को कोसने से कुछ हासिल होने वाला नहीं है, लेकिन देश के सामने यह आना ही चाहिए कि संपूर्ण शासन

ने किस तरह हालात बेकाबू हो जाने दिए। आर्थिक मोर्चे पर दुर्दशा की तस्वीर उजागर करके ही मोदी सरकार कड़े फैसलों के औचित्य को सिद्ध करने में सक्षम हो सकेगी। पिछले दिनों रेल किराये-भाड़े में वृद्धि के फैसले से जनता को इसलिए और अधिक झटका लगा, क्योंकि सरकार ने यह फैसला लेने के पहले न तो कोई भूमिका बनाई और न ही जनता को यह बताने की जरूरत समझी कि भारतीय रेल किस तरह कंगाली की हालत में पहुंच चुकी है। अगर रेलवे की खस्ताहाल स्थिति और उसके जरिये की गई राजनीति को बयान करने के बाद रेल किराये-भाड़े में वृद्धि की घोषणा की जाती तो शायद आम जनता की प्रतिक्रिया कुछ भिन्न या फिर कम तीखी होती। यह समय की मांग है कि सरकार तरक्की की रफ्तार बढ़ाने, रोजगार के अवसरों को पैदा करने और घाटे वाली अर्थव्यवस्था से उबरने के जो तमाम उपाय कर रही है उनके बारे में जनता को अवगत कराती चले। पिछले 20-25 दिनों में केंद्र सरकार की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में अनेक फैसले लिए गए हैं। इनमें

से कुछ फैसले बेहद महत्वपूर्ण हैं और अर्थव्यवस्था को गति देने के साथ आर्थिक परिदृश्य को बदलने वाले भी हैं, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि आम जनता इन फैसलों और उनसे होने वाले लाभों के बारे में पूरी तरह परिचित है। इन स्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि रेल बजट और आम बजट की तैयारियों के साथ ही सरकार की ओर से यह बताया जाए कि उसने क्या कुछ कर लिया है और क्या कुछ करने जा रही है? उसकी ओर से ऐसी बड़ी घोषणाएं भी की जा सकती हैं जो जनता को दिलासा दें। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि हर बीतते दिन के साथ आम जनता की बेसब्री बढ़ती चली जा रही है। वह उन तमाम वायदों को भूली नहीं है जो मोदी और उनके साथियों ने चुनाव प्रचार के दौरान किए थे। यह सही है कि चुनाव घोषणापत्र और उसके बाद राष्ट्रपति के अभिभाषण के जरिये जो एक उजली तस्वीर दिखाई गई उसे आनन-फानन अथवा बजट के माध्यम से पूरा नहीं किया जा सकता, लेकिन जनता में भरोसा पैदा करने का काम तो किया ही

18/26pt.- Grumpy wizards make toxic brew
for the evil Queen and Jack. One morning,
when Gregor Samsa देवनगर woke from troubled
dreams, he found himself transformed in
his bed into a horrible vermin. He lay on his
armour like back, and if he lifted his head a
little he could see his brown belly, slightly
domed and divided by arches into stiff sections.

दुष्ट राक्षसी के राजा रावण का सर्वनाश करने वाले
वशिष्ठवतार भगवान श्रीराम अयोध्या के महाराज दशरथ
के बड़े सपुत्र थे राक्षसराज के दुष्ट राजा का सर्वनाश
करने वाले वशिष्ठ के अवतार भगवान श्रीराम का जन्म
अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र के रूप में हुआ।
ऋषिसिद्ध राक्षस क्षत्रिय ज्ञानी श्रीलंका श्रवण
खरदुशन आकार प्रकार राम कथा धनुष फल भारत पाप
पुण्य अच्छाई बुराई जनक नरेश शाप गडगा घृणा
El veloz murciélago hindú कौशल्या कैकई इतराना
लज्जा तुलसीदास रचति केवट कठोर हार डंका ढील जधिरअ-
तेव सुअरयो ०१२३४५६७

The bedding was hardly able to cover it and
seemed ready to slide off any moment. His
many legs, pitifully thin compared with the size
of the rest of him, waved about helplessly as he
looked. 01234567890